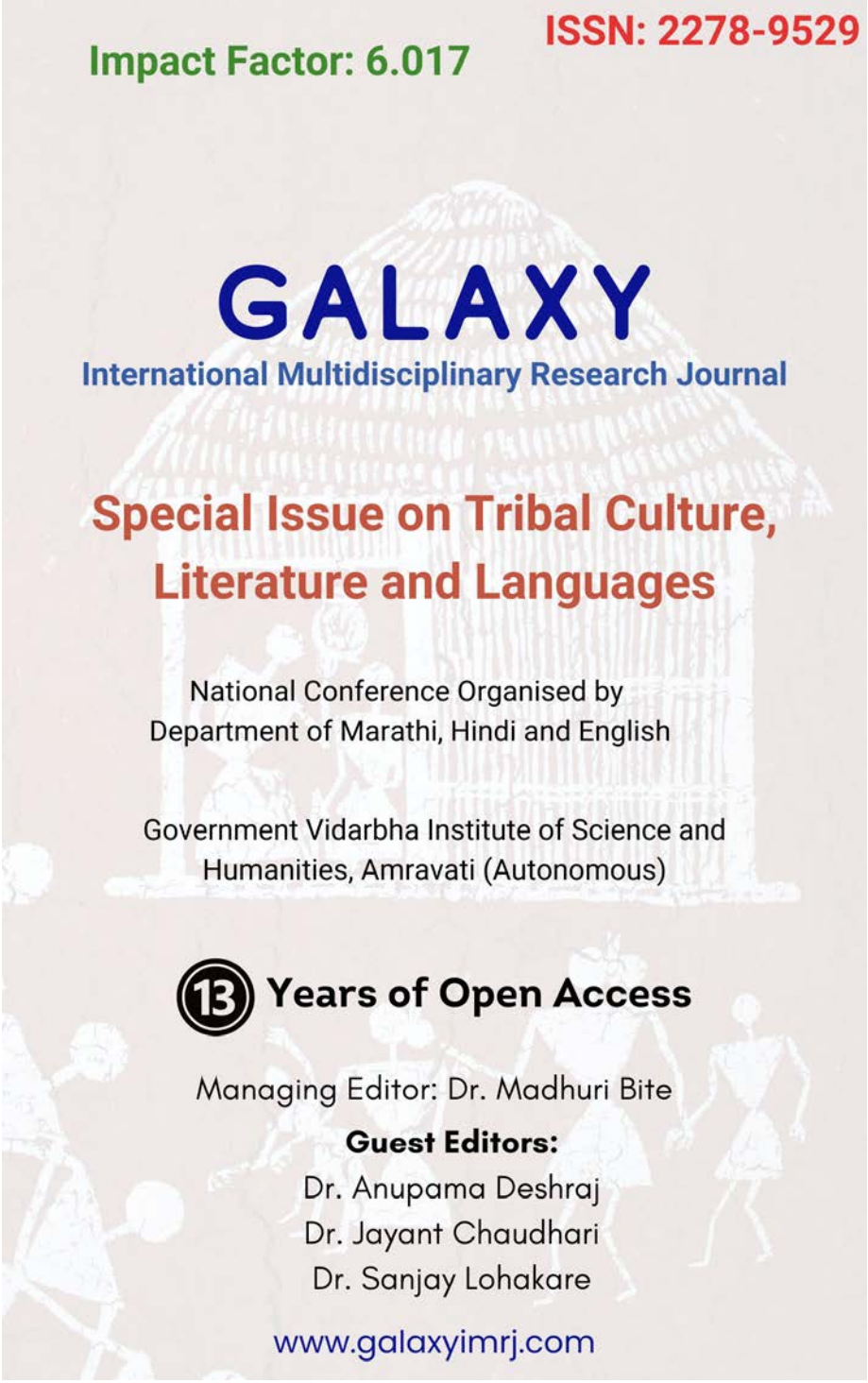

About Us: http://www.galaxyimrj.com/about-us/
Archive: http://www.galaxyimrj.com/archive/
Contact Us: http://www.galaxyimrj.com/contact-us/
Editorial Board: http://www.galaxyimrj.com/editorial-board/
Submission: http://www.galaxyimrj.com/submission/
FAQ: http://www.galaxyimrj.com/faq/

कोरकू 'खंब' लोकनाट्य : एक विश्लेषण

रामगोपाल रामलाल भिलावेकर
शोधार्थी
श्रीमती के शरबाई लाहोटी महाविद्यालय, अमरावती

सांराश : -

खंबनाट्य कोरकुओं का महत्त्वपूर्ण एवं लोकप्रिय कला प्रकारों में से एक है। यह लोग खंब का आयोजन विविध अवसरों पर करते है। खंब यह आदिम कोरकुओं का एक खुला रंगमंच है। जहाँ पर लोक नाटककारों द्वारा विविध प्रकार के नाटक प्रस्तुत किये जाते हैं। इन नाटकों का विषय वस्तु कोरकू जीवन से संबंधित विविध घटित घटनाएँ होती है, जिसमें मुख्यतः कोरकू गावों में होनेवाली लड़ाई-झगड़े का निपटारा, खेती किसानों से संबंधित घटनाएँ, प्रकृति की विविध चमत्कारिक घटनाएँ, भूत-प्रेत, आज की वास्तविक ज्वलंत समस्याएँ, सरकारी योजनाओं की सफलता-विफलता, स्वयंसेवी संस्थाओं की क्रियाकलाप एवं शोषण, वनाधिकारियों द्वारा किये जानेवाले जुल्म एवं तानाशाही, स्वास्थ्य विषयक समस्याएँ, गांव की परंपरागत उपचार पद्धति, व्यापारियों द्वारा किया जानेवाले शोषण, घरेलु झगड़े, पारिवारिक विवाद, खेती-बाड़ी के बंटवरों संबंधी विवाद, पति-पत्नि के झगड़े आदि को नाट्य विषय बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। खंब नाट्य का महत्त्व यह है कि इस नाटक के माध्यम से लोक कलाकार अपने समाज का मनोरंजन तथा समाज को संस्कार और शिक्षा देते है। खंबनाट्य हास्य-व्यंग्य से परिपूर्ण कला प्रकार है, जिसके माध्यम से समाज का प्रबोधन किया जाता है।

बीज शब्द : - कोरकुओं के खंबनाट्य तथा दंतकथा, खंबनाट्य का स्वरूप, खंबनाट्य का अवस्थांतर, प्राचीन, मध्ययुगीन, आधुनिक।

उद्देश :- 1. कोरकू खंबनाट्य का अध्ययन करना।
2. कोरकू मौखिक परंपरा का दस्तावेजीकरण करना।
3. कोरकू जीवनदर्शन को समझना।

शोध-प्रविधि :- प्रस्तुत शोधालेख के लिए साहित्यिक शोध-प्रविधि का प्रयोग किया गया है। साथ ही आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय शोध-प्रविधि का प्रयोग भी किया गया है। इस शोधालेख कार्य की पूर्णता हेतु संकलित नाट्य, लोकगीत, साक्षात्कार तथा कोरकू अभ्यासक, अनुसंधानकर्ताओं द्वारा लिखित ग्रंथ, आलेख आदि साधन-सामग्रियों उपयोग किया गया है।

मूल आलेख :-

प्रस्तावना :-

नाट्यात्मक आविष्कार की पंरपरा को देखना है तो हमें आदिम काल तक जाना होगा। भारत में आदिकाल से ही नाट्याविष्कार की पंरपरा प्रचलित है। आदिम संस्कृति यह नृत्यात्मक है। नृत्य को ही रंगभूमि की जननी होने का गौरव प्राप्त है। 'नर्त' इस धातु से 'नट' यह शब्द की उत्पत्ति हुई है। आदिकाल के मानव ने गुफाओं में रेखांकित किये हुए रेखाचित्रों में भी नाट्यात्मकता का दर्शन दिखाई देता है। सिंधु संस्कृति के नर्तिका की मूर्तिशिल्प में भी एक विशिष्ट नाट्याभिनय का स्वरुप दिखाई देता है। "भारत के आदिम जनजाति में रंगभूमि का आविष्कार कैसे हुआ है? यह गुफाओं की चित्रों को देखकर स्पष्ट होता है। सिंधु संस्कृति के कालखंड में रंगभूमि में नाट्य की प्रस्तुति से लोक अपने मनोरंजन किया करते होगें, ऐसा कह सकें इतना तो पुक्ता साबूत उपलब्ध है। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के खुदाई से छरहरी देह वाली एक ब्रांझ की नृत्य करनेवाली स्त्री की मूर्ती मिली है। अल्प अलंकार से, विशेषत: हाथों का कंगना, गर्दन की माला (हार) से सजी हुई, वह नग्न स्त्री प्रतिमा द्राविड़ी स्त्री की है। नृत्य की आविर्भाव में दिखाई देनेवाली मूर्ती मिट्टी की तथा पत्थर की मूर्ती बनाते दिखाई देते है। एक पुरुष नर्तक की मूर्ती भी अपने सम्पुर्ण तन्मयतापुर्वक नृत्य करते हुए एक चुनखड़ी के पत्थर में मिले है। यह सिंधु संस्कृति के ही नटराज की मूर्ती दिखाई देते है। नृत्य-नाट्य का अधिष्ठाता नटराज इस मूर्ती में चित्रीत दिखाई देते है।"

भारत में ही नही बल्कि सम्पुर्ण विश्व में मिले तमाम गुफाओं के पत्थर पर शिकारी का चित्र चित्रांकित किया हुआ दिखाई देते है। कई स्थलों पर नृत्याविष्कार स्त्री-पुरुषों के चित्र, शिगों के वाद्य, हल आदि रेखांकित किये हुए दिखाई देते है। भरत ने भी अपने ग्रंथ में

नाट्यशास्त्र में नाट्य का उगम यही नकल करने की प्रवृत्ति से हुआ है ऐसा माना है। अर्थात ऐसा कह सकते हैं कि आदिम मानव शिकार की नकल करने से आदिम नाट्य रंगभूमि का आविष्कार हुआ है।

कोरकू खंबनाट्य :-

कोरकू जनजातियों के कला प्रकारों में 'खंब' यह एक लोकप्रिय नाट्य प्रकार है। 'खंब' अर्थात् खंबा (खंभा)। खंब यह पूर्णत: उत्स्पूर्त और प्रासंगिक नाट्य प्रकार है। लगभग पोला से आरंम्भ होकर भवई तक चलता है। आजकल मेलघाट परिसर के लोक कलाकार खंबनाट्य स्पर्धा भी का आयोजन करने लगे है। 'खंब' यह रावण पुत्र मेघनाथ का प्रतीक माना जाता है। गाव के मध्य रिक्त जगह में पूजा-आराधाना की जाती है। खंब के उपरी नोक पर बैलगाडी का चाक और नोक पर लोटा उटला करके रखा जाता है। खंब के पास में एक बड़ा-सा वृत्त आँखा जाता है। उस वृत्त के बाहर गाँव के प्रेक्षक खंबनाट्य देखने के लिए बेठते है। खंब की यथोचित पूजा होने के बाद खबंनाट्य का आरंभ होता है। खंब यह संगीत, नृत्य, गायन व नाट्य अभिनयमूलक बहुरंगी नाट्य प्रकार है। महाराष्ट्र में दंडार, सोंगी भजन, मध्यप्रदेश में माच, ब्रजभाषा में स्वांग तथा कलापथक जैसे मिलता-जुलता कला प्रकार है। मेघनाथ खंब यह विधिनाट्य प्रकार कोरकुओं में प्रचलित है। होलिका दहन के बाद मेलघाट के अनेक गाँवों में मेघनाथ खंब की पूजा प्रचलन में है। होलिका दहन के बाद मेलघाट के अनेक गाँवों में मेघनाथ खंब बनाकर भुमका बाबा को खंब के उपर लटके, आड़े लकड़ी में बाँधकर गोल फिराया जाता है। विधीवत् पूजा होने के बाद खंब के पास में स्त्री-पुरुष गोलाकार घुमकर नृत्य करते है। इस प्रसंग में मेघनाथ खंब के उपर बंधे हुए 'जेरी' (गुड़, नारियल एवं पैसे) तोड़ने के लिए गाँव के युवकों में खंब के उपर चढ़ने की स्पर्धा सुरु होती है। इस विधीत्मक क्रीड़ा प्रकार से कोरकुओं के खंबनाट्य परंपरा चली आ रही होगी। मेघनाथ खंब और खंबनाट्य के खंब के संबंध में कोरकुओं में कुछ दन्तकथा प्रचलित है। इसमें कोरकुओं के सास्कृतिक अनुबंध की जानकारी मिलती है।

कोरकुओं के खंबनाट्य तथा दंतकथा :-

परंपरा से चली आ रही प्रत्येक रीतिरिवाज, विधी, पर्व-त्यौहार इससे संबंधित अनेक प्राक्कथा लोकमानस में रुढ़ होता है। खंबनाट्य के 'खंब' तथा 'नाट्य' इसके संदर्भ में दो दंतकथा कोरकुओं में आज भी प्रचलित है। इस दो दंतकथाओं से हम निश्चित निष्कर्ष तक तो नही पहुँच सकें, किंतु कोरकुओं का सांस्कृतिक अनुबंध की सूचकता निश्चित ही जान पाएँ।

"कोरकुओं के प्रदेश में एक बार एक दुष्ट राक्षस बहुत उत्पात मचा रहा था। कोरकुओं का जीना दुश्वार किया था। तब उन्होंने महादेव की आराधना की। महादेव को प्रसन्न किया । महादेव को दुष्ट राक्षस का वध करने के लिए सभी ने विनती की। महादेव ने अपने भक्त रावण को उस राक्षस का वध करने का आदेश दिया। रावण ने अपने पराक्रमी पुत्र मेघनाथ को उस राक्षस का वध करने के लिए भेजा। मेघनाथ ने अपने पराक्रम के बल से उस दुष्ट राक्षक का वध किया और कोरकुओं को उसके चंगुल से मुक्त किया। तब से ही कोरकू लोग होली के पश्चात मेघनाथ की स्मारणार्थ में होलिका दहन के बाद मेघनाथ बाबा की पूजा करते है।"

खंब यह नाट्य प्रकार कैसे अस्तित्व में आया इसके संबंध में ओर एक लोककथा कोरकुओं में प्रचलित है। "महादेव एक बार बहुत क्रोधित हुए। उसने रुद्रावतार धारण किया। महादेव तीसरी आँख खोलकर सृष्टि की विनाश न कर दे, इसलिए पार्वती ने महादेव को प्रसन्न करने के लिए एवं उसके मनोरंजन करने के लिए अपने कुछ दूत को महादेव के पास भेजा। पार्वती के भेजे हुए दूत अनेक कलाओं में निपूण थे। उन्होंने महादेव के सामने अनेक स्वांग किये, नृत्य प्रस्तुत किये, गाने गाये, वाद्य बजाए। अंत में महादेव दूतों के कलाविष्कार से प्रसन्न हुए।" तब से खंब का आविष्कार कोरकुओं में माना जाता है। हम महादेव को खंब का आविष्कार करके प्रसन्न रखेगें, ऐसी कोरकुओं की श्रद्धा है।

उपर्युक्त दोनों ही कथा में अनार्य संस्कृति के आराध्य देव महादेव का उल्लेख आया है। कोरकू भी सर्वप्रथम महादेव के शरण में जाते हैं। दोनों ही कथा में शंकर को प्रसन्न करने का आशय हैं। पहली कथा के आधार पर दूसरी कथा रची गई होंगी। पहली कथा में श्रद्धा सर्वाधिक है, तो दूसरी कथा में खंबनाट्य के प्रस्तुतीकरण के वजह से देवता प्रसन्न होता है, यह विश्वास है। उपर्युक्त दोनों कथा में से पहली कथा आशय की दृष्टि से अधिक विश्वासनीय लगती है। पहली कथा के तुलना में दूसरी कथा पौराणिक कथाओं की जानकारी के आधार पर बनाई गई होंगी। महादेव का रूद्रावतार और त्रिनेत्र की संकल्पना यह पौराणिक वाड:मय से ली गई होंगी। पहली कथा में रावण व महादेव इनके बीच ईश्वर भक्ति, मेघनाथ की शौर्य एवं रावण-मेघनाथ के अनार्य संस्कृति के रक्षण, यह अनार्य संस्कृति से संबंधित संदर्भ विश्वासनीय लगता है। रावण यह अनार्य संस्कृति का रक्षक था। इसकी पुष्टि अनेक पुराणादि ग्रंथों में देखने को मिलता है। कोरकू जनजाति में रावण,

मेघनाथ, कुंभकर्ण इनकी भक्ति अनादि काल से चली आ रही हैं। कोरकू लोकगीतों में भी इसके संबंध में उल्लेख मिलता है। रावण यह महान शिवभक्त तथा आर्य संस्कृति का रक्षक राजा था। इसका ज्ञान कोरकुओं को है। रावण के विनती से महादेव ने पृथ्वी पर मनुष्य कृति बनाई, ऐसी धारणा कोरकुओं के कथा, गीतों में अभिव्यक्त होता है। कोरकू स्वयं भी महादेव भक्त होने के कारण उन्हें रावण के प्रति आदर हैं। अतः खंब लोकनाट्य महादेव, रावण तथा मेघनाथ आदि के स्मारणार्थ मनाया जाता है।

खंबनाट्य का स्वरूप :-

'खंब' यह मौखिक नाट्य प्रकार होने के कारण इसकी संहिता कहीं पर भी नहीं मिलती। 'खंब' पूर्ण रूप से उत्स्फूर्त एवं प्रासंगिक नाटक प्रकार है। कोरकू जनजीवन की क्रिया प्रतिक्रियाओं का उन्मुक्त अविष्कार इस नाट्य प्रकार में अभिव्यक्त होता है। महाराष्ट्र के लोकनाट्य के जैसे ही कोरकुओं के खंबनाट्य भी पूर्वरंग एवं उत्तररंग ऐसे दो भागों में विभाजित हैं। गणेश चतुर्थी से खंब का प्रस्तुतीकरण शुरू होता है। साधारणत: रात्रि को खाना खाने के बाद ही गांव के लोग खंब देखने आते हैं। गांव के तथा आसपास गांवों के लोगों को भी खंब के लिए निमंत्रण दिए जाते हैं। गांव के बीचों बीच मध्य में एक वृत्त बनाया जाता है। यही खंब का खुला रंगमंच रहता है। इस गोलाकार के मध्य भाग में एक लकड़ी का बड़ा खंभा गड़ा हुआ होता है। उसके पास में ही बड़ा वृत्त चुना से बनाया जाता है। इस प्रकार वृत्त के बाहर गांव के प्रेक्षक मंडली बैठते हैं। खंबनाट्य शुरु होने से पूर्व खंब की पूजा की जाती हैं। गुड़ साखर का प्रसाद प्रेक्षकों में बांटा जाता है। पूजा प्रसाद होने के बाद खंबनाट्य का आरंभ होता है। खंबनाट्य के पूर्वरंग में गांव के जेष्ठ गायक मंडली खंब को गोलाकार में घूम-घूमकर गणेश वंदना करते हैं। इस गणेश वंदना में महादेव पार्वती का उल्लेख प्रमुखत: से किया जाता है।

अरे तुम सुमहरो ओ म्हारी माय
गणपती लागु तुम्हारे पाय -2 ।।टेक।।
शिव शंकर को पुत्र कहवायो
अरे वोगमगा गौरी माई
गणपती लागु तुम्हारे पाय
अरे तुम सुमहरो ओ म्हारी माय
गणपती लागु तुम्हारे पाय -2 ।।1।।
देह तरी काडू दान्ता तरी उजाड़ो
अरे वो लंबीय सोड बाड़ाएं
गणपती लागु तुम्हारे पाय
अरे तुम सुमहरो ओ म्हारी माय
गणपती लागु तुम्हारे पाय -2 ।।2।।
लंबोधार गजबदन मनोहार
अरे वो कर में त्रिशूल धाम
गणपती लागु तुम्हारे पाय
अरे तुम सुमहरो ओ म्हारी माय
गणपती लागु तुम्हारे पाय -2 ।।3।।
रिद्धी-सिद्धी दौओ चामर धुलाय
अरे भाई मुशक वहन सावाय
गणपती लागु तुम्हारे पाय
अरे तुम सुमहरो ओ म्हारी माय
गणपती लागु तुम्हारे पाय -2 ।।4।।

भक्ति गीत के माध्यम से गायक मंडली गणेश स्तवन करते है। खंबनाट्य की यह शुरुआत भक्ति परक होती है; किंतु साथ ही वातावरण निर्मिती के लिए गायक मंडली गाने के उतार-चढ़ाव के तान अनुतानों से गायन को एक ऊंचाई पर ले जाते है। झांझ, मृदंग एवं

बांसुरी इनके तालसुर में गणेश वंदना प्रस्तुत की जाती है। पारंपरिक लोकनाट्य में होने वाले गणेश वंदना जैसे ही परंपरा होने के बावजूद भी सांस्कृतिक दृष्टिकोण से इन्होंने अपनी पृथकात्म स्वरूप को कायम रखा है। डॉ मधुकर वाकोड़े इनके मतानुसार "मालवा के 'माच' यह लोकप्रिय लोकनाट्य श्री गणेश के स्मरण से या लोक देवताओं के अवतरण से आरंभ होता है। यह इसकी खासियत है। 'माच' इस नाटक में आरंभ में मंच पर बाल गणेश का अवतीर्ण होता है तथा आदिवासी खंबा इस विधि नाट्य में भी बाल गणेश का ही अवतरण होने के कारण आरंभ से ही खंबनाट्य शैली पर 'माच' इस नाट्य शैली का प्रभाव प्रतिबिंबित होता है।'' गणेश वंदना के बाद रासग्वाल प्रस्तुत किया जाता है अर्थात श्री कृष्ण कथाओं पर आधारित गीत। इस गीतों में श्रीकृष्ण महात्मा एवं कृष्ण लीला इस तत्व को अधोरेखित किया जाता है। खंबनाट्य में गणेश वंदना, रासग्वाल, सोंग भजन यह सभी गीत प्रकार निमाड़ी लोक भजन परंपरा से प्रविष्टि हुई होगी। इन सभी गीतों में हिंदी भाषा के साथ ही निमाड़ी भाषा लोक भजन की गायन परंपरा का प्रभाव दिखाई देता है।

रास से मंडल प्रभु जीना रचियो कोटभवन उजियाला ।।टेक।।
लाल बिंद के रंग बनाये चितल गोपी ग्वाला
भवरे मंडल बिच रास रचो है मोती का रोम लगाया
लाल पान के फुल लगाये भवरा करे गुलजारा ।।1।।
चांद-सुरज पीयू खंब गड़ाये हीरा रत्न जड़ाये
तारा तोरी न दिपक जलावे धूद न बजत नगाड़ा ।।2।।
ब्रम्हापूरी छाप न्यारी ना हो इंद्रपुरी छाप अपनीया
कैलास के छाप न्यारी ना हो बैकुंट करत विलाप ।।3।।
नुरट अबद बाई शब्दो सोला मोहन मुरलीवाला
सुरनर स्वामी अंतर ध्यामी हरि के रस गुण गावो ।।4।।

रास मंडल यह खंबनाट्य के पूर्वरंग का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। श्रीकृष्ण यह कृषि परंपरा का वाहक, अनार्यों का प्रतिनिधि ऐसी कोरकुओं की धारणा है, तथा मेलघाट के गवळी समाज के संपर्क में आने तथा मध्यप्रदेश के निमाड़ी सोंगनाट्य के प्रभाव से प्रभावित होकर श्रीकृष्णा भक्ति की परंपरा कोरकुओं के खंबनाट्य में शुरु हुई होंगी। लोकसाहित्य के अभ्यासक डॉ. मधुकर वाकोड़े इनके मतानुसार "इसकी जैसी रासक्रिड़ा शैली का प्रतिबिंब वैष्णव सम्प्रदाय से 'माच' में आया तथा 'माच' से खंबनाट्य शैली में आ गये होंगे। मूलत: कोरकू आदिवासियों की कृष्ण पूजा से कोई संबंध नहीं है; किंन्तु मेलघाट के बहुताश: गाँवों में कोरकुओं के साथ-साथ गवली समाज होने के कारण यह समन्वय सीधा स्थापित हो गया होगा। मेलघाट के कोरकू आदिवासी मध्यप्रदेश के सीमावर्ती प्रदेश में रहने के कारणास्ताव यह मराठी, वऱ्हाडी की अपेक्षा हिंदी भाषा इनको प्रिय लगती है। पूर्वरंग के भजन हिंदी में तो उत्तर रंग के नाट्य प्रसंग खासकर कोरकू भाषा में होता है। अर्थात हिंदी-कोरकू भाषा यह खंबनाट्य शैली का माध्यम बन जाता है। उत्तर भारत में संत चैतन्य इन्होंने प्रत्यक्ष अपने शिष्यों के साथ कृष्ण चरित के प्रसंग बाँटकर पारंपारिक नाट्यशैलियों को कृष्ण भक्ति की ओर ले जाने का प्रयत्न 16वीं शताब्दी में प्रारंभ किया गया, उसका परिणाम उत्तर ओर की नाट्यशैली पर हुआ और उसके प्रभाव से खंबनाट्य में गोप गोपिकाओं की रास नृत्य आई, ऐसा होने के बावजूद भी यातुक्रियात्मक प्रवेश का प्रभाव अधिक रहा है। नाट्य की आत्मा आदिम स्तर पर की ही है।'' गणेश वंदना होने के बाद रासग्वाल अर्थात श्री कृष्ण भक्ति पर गीत गाए जाते हैं। इस गीत के तालसुर पर स्त्री पोशाकधारी पुरुष मंडली गोलाकार से घुमकर नृत्याविष्कार करता है। स्त्री पोशाकधारी पात्र को 'राधा' नाम से संबोधित किया जाता है। सामान्यत: 2-3 राधा गानों के तालों पर नृत्य करते हैं। कोरकुओं के गांव गांव में ऐसे राधा सहज देखने को मिलते है। प्रथम दर्शनी उनके रहन-सहन तृतीय पुरुषों के जैसे लगता है किंतु उनके सांसारिक जीवन सामान्य लोगों के जैसे हैं। खंबनाट्य के निमित्त से ऐसे नाट्याविष्कार करने वाले राधाओं को अनेक गांवों से निमंत्रित किया जाता है। गायन वादन और राधाओं के नाट्याविष्कार जब चरम सीमा पर जाता है तब वातावरण में एक मंत्रमुग्ध करने वाली खुमारी छा जाती है।

खंबनाट्य के पूर्वरंग में खंबपूजन, गणेश वंदना और रासग्वास प्रस्तुत होने के बाद नाट्याविष्कार करने वाले सोंगनाट्य समूह गोलाकर वृत्त के बाहर से ही रासग्वाल सादर करने वाले गायक मंडली को अपने आ जाने का इशारा देते है। 'दोयरा.....सुनी दोयरा राम भजो सिया राम' ऐसे आवाज से खंब भजन गाने वाले गायकों को संदेश दिया जाता है, तब गायन करने वाले मंडली व नृत्याविष्कार करने

वाले राधा गोलाकार के बाहर जा कर बैठ जाते हैं। सोंगनाट्य समुह जब गोलाकार के अंदर प्रवेश करता है, तब वे दोहा गाते हुए प्रवेश करते हैं। जैसे –

करना गणराज दया हम तुम्हें बुलाते है
नमनकर श्रद्धा पुष्पा चरणों में चढ़ाते है
ले आओ कोटि देवी-देवता
साथ आसन में बैठेगें
भक्ति गीतों की महफिल
आज हम सजाते है।

गणेश वंदना -

गौरी के नंदन सभी दुःख बंधन
करो काम मेरा तुम आके गजानन आके गजानन ।।टेक।।
प्रथम सभा में गजानन तुझको मनाऊँ
मुशक के सवारी तुझको मनाऊँ
तुझको मनाऊँ गजानन तुझको मनाऊँ ।।1।।
गौरा माता के तुम हो दुलारे
पिता शंकर के तुम हो प्यारे
मनायें दुनियां सारी तुम आओ गजानन ।।2।।
रिद्धी-सिद्धी के तुम हो स्वामी
रिद्धी-सिद्धी के तुम हो स्वामी
हम सबकी बिगड़ी बनादो तुम आके गजानन ।।3।।
तुम हो ज्ञान के भंडार
तुम हो बुद्धी के स्वामी
सदबुद्धी सबको तुम देना आके गजानन ।।4।।

सोंगनाट्य सादर करने वाले पहले टीम गोलाकार के भीतर जब प्रवेश करते हैं। तब खंब पास गोलाकार घूमकर गणेश वंदना प्रस्तुत करता है। यहाँ पर पूर्व रंग के गणेश वंदना से थोड़ा हटकर गणेश वंदना का स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। सोंगनाट्य के गणेश वंदना में एक पात्र गणेश की भूमिका में होता है। यह गणेश रूठे हुवे होते है। इस रूठे हुए गणेश को रिझाने के लिए गणेश स्तवन प्रस्तुत किया जाता है। गणेश जी को मनाए, उसकी आरती की जाए, इस प्रकार के प्रसंग नाट्याभिनय में प्रस्तुत किया जाता है। गणेश जी की पूजा आरती व नारियल भेंट चढ़ाने के बाद गणेश जी प्रसन्न होते हैं। गणेश के भूमिका में होने वाले पात्र वाद्यों के ताल पर नृत्य अविष्कार करता है एवं नृत्य अविष्कार करते-करते रंगमंच से यह समूह प्रस्थान करता है। विदूषक यह सोंगनाट्य में एक विनोदी पात्र होता है। उसे 'सोंगोड़्या या मसकऱ्या' कहा जाता है। लोगों के मनोरंजन करने के लिए वहाँ चित्र-विचित्र वेशभूषा एवं अंगविच्छेद करता रहता है।

गणेश स्तवन समाप्त होने के बाद नाटक मंडली सोंगनाट्य गीत प्रस्तुत करता है। इस गीत में प्रस्तुत किये गये नाट्य के विषय में आशय अभिव्यक्त किया जाता है। जिस विषय पर नाटक आधारित था, उस विषय के बारे में इस गीत के माध्यम से संदेश दर्शकों को दिया जाता है। जैसे –

डाणी घामा डून जा बोको बाबा ओरोउ
लोकोड़ेन बेकार साल हेजकेन जा
डाईचो कास्तकारा बुरा हाल जा ।।धृ।।
उन्हाळा भर घामू तालन इंज खिती सिवेन
डा हाजेवा भरोसान इंज बिडवेन

डानी घामाडून बोको बेकार साल हेजकेन जा
डाईचो कास्तकारा बुरा हाल जा ।।1।।
म्या मन बारी मन सोयबिन तुरी बिडवेन
म्या किलो बारी किलो कापुसो मेकाई विडवेन
म्या मुठी म्या खोचा चुजकानी डाडून जा
डाईचो कास्तकारा बुरा हाल जा ।।2।।
माय आबा कोनकु बोकोचो उरागेन पेडागे जा
आलींज साना डुकरी नी कामाये सेनेवा जा
मेटे माका आटा जीजोमानी घाटाऊ जा
डाईचो कास्तकारा बुरा हाल जा ।।3।।
आलीज साना डुकरी ईमानदारी टेन कामायवेन
आले ठेकेदार नी खद्धा लुच्चा ओटकेन
आलीयाँ नी कामाय डामा नी जीडून जा
डाईचो कास्तकार बुरा हाल जा ।।4।।

प्रस्तुत गीत में किसानों के विदारक वास्तविक जीवन का चित्रण किया गया है। वह वर्ष भर खेत में मेहनत करने के बाद बीज बोता है, परंतु समय पर पानी ना होने के कारण किसानों की बुरी दशा हो जाती हैं। इस तरह के प्रश्न उनके समक्ष उपस्थित हो जाता है। इस प्रकार अपने बाल बच्चों के पेट भरने के लिए वे ईमानदारी से मेहनत करने वाले श्रमिकों को ठेकेदारों के द्वारा होने वाले शोषण तथा अन्य ज्वलंत प्रश्नों को उपरोक्त लोकगीतों में अधोरेखित किया गया है। आदिवासियों की धर्म भावना विराट निसर्ग दर्शन से और भूत सृष्टि के अवधारणाओं से विकसित होने के कारण कई बार नाट्याभिनय में भूत पिशाच आदि के विषय को प्रस्तुत किया जाता है।

लोकमानस में भूत बाधा की जो घटना घटित होती है, उस पर आधारित नाट्य भूतों की, भूत, भूत बाधित व्यक्ति के भूत भगाने की मंत्रओं के नकल लोक मंच पर से विविध प्रसंगों के माध्यम से किया जाता है। इसके अलावा लोक जीवन के गंभीर एवं विनोदी किस्से, पिय्यकडों का तमाशा, दो पत्नी करने वाले पति की होने वाली फजिता, खेती को लेकर होने वाले वाद-विवाद, घर के भीतर सास-बहू की लड़ाई, जोरू का गुलाम पति के विषय में, गैर आदिवासी अधिकारियों के द्वारा होने वाले शोषण, धाक-धमकीशाही, वन अधिकारियों द्वारा होने वाले अन्याय, लाचार एवं भ्रष्ट अधिकारी, ठेकेदार-व्यापारी-सावकार इनके द्वारा कोरकुओं के होने वाले शोषण, अन्याय, अत्याचार, नैसर्गिक संकट के कारण होने वाले स्थानांतरण, पुलिस प्रशासन की ओर से किये जाने वाले अन्याय, स्वयंसेवी संस्थाओं के द्वारा विघातक कार्य, वनकायदा के कारण होने वाला नुकसान, सार्वत्रिक चुनाव के निमित्त सफेद पोशाकदारी नेताओं के द्वारा किए जाने वाले नाटक आदि। इस प्रकार के अनेक विषयों को खंबनाट्य में आविष्कृत किया जाता है। इस सभी नाट्यकलाओं में एक ही समय में विनोद एवं कारुण्य इसका संगम देखने को मिलता है।

उपर्युक्त सभी विषय प्रस्तुत करते समय कलाकारों की संवाद एवं अभिनय इस आधार पर निर्माण किया जाता है कि यहाँ पूर्णतः पुरुष कलाकारों का नाट्य प्रयोग हैं। इस नाटक में स्त्रियों की भूमिका गांव के युवक लड़कों द्वारा किया जाता हैं। कई बार रासमंडल के नृत्य आविष्कार करने वाले राधा ही यह सोंगनाट्य में स्त्रियों की भूमिका निभाते हैं किंतु सोंगनाट्य के स्त्री पात्र की भूमिका निभाने वाले को 'नाच्या' कहा जाता है। स्त्री वेषधारी पात्र आकर्षक अभिनय करके प्रेक्षकों को मंत्रमुग्ध कर देते है। हास्य व्यंग के माध्यम से वास्तविक कारुण्यपूर्ण की निर्मिती यही इस नाट्य कला का उद्देश्य होता है।

खंबनाट्य का 'उत्तररंग' यह अंतिम भाग अर्थात् 'बोधगीत या पालटी गीत' इसे 'जागरण गीत' भी कहा जाता है। नाट्य प्रस्तुतीकरण के पश्चात नाटक के सभी पात्र खंब के पास एकत्र होकर प्रस्तुत किया गया नाट्यानुरुप बोधगीत गीत प्रस्तुत करता है। मराठी के भारुड में जैसे रंजन व प्रबोधन मूल्य को पूरा किया जाता है, ठीक उसी प्रकार का खंबनाट्य भी है। नाट्य विषय जब बीमारियों से संबंधित होता है तब निम्नांकित गीत गाए जाते हैं। जैसे –

ये डाईचो ये बोकोचो जल्दी दवाखानन सेनेजा सेनेजा

आपेनी लाजो बाकी जा डाई डाई ।।धृ।।
गुप्त बीमारी के डाई आमनी बाकी हुकूजा
लाजो शरेम टेन डाई आमनी गोईबा जा ।।1।।
जे मायचो ये आबाचो, जल्दी.....
दवाखानन आमनी पहला सेनेजा सेनेजा
भुमका पड़ियारा नी आमली बाडोन सेनेजा ।।2।।
ये काकाचो ये मामाचो जल्दी.....

इस गीत के माध्यम से बीमार व्यक्ति को जल्द से जल्द दावाखाना ले जाने की बात कही गई है। कोरकू समाज यह शहरी संस्कृति से काफी दूर होने के वजह से व्याधि विकारों के उपचारार्थ सर्वप्रथम गांव के भूमका परिहार के पास जाते है। भूमका परिहार मंत्र तंत्र आदि का उपयोग इस प्रसंग में करता है। इससे विकार ठीक होगा ही ऐसा कुछ नहीं है। यह सत्य कुछ जानकारों को समझ आ जाने के कारण जानबूझ कर खंबनाट्य के माध्यम से लोगों के प्रबोधन के लिए ऐसे विषय का चयन किया जाता है।

खंबनाट्य का अवस्थांतर :-

'खंब' सम्मिश्र नाट्यप्रकार है। इसे 'रासग्वाल' व 'सोंग' ऐसे दो हिस्सों में बाँटा गया है। रासग्वाल में नृत्य और गायन प्रस्तुत किया जाता है; तो सोंग में प्रमुखतः नाट्याभिनय को अधिक प्रधान्य दिया जाता है। परंपरा से चली आ रही 'खंबनाट्य' यह विधि नाट्य प्रकार का स्वरूप भी समयानुरुप बदलते जा रहा हैं। खंबनाट्य का प्राचीन परंपराओं का अवलोकन करने के लिए गाँव के कुछ बुजुर्गों के पास से जानकारी संकलित की गई है। उस समय परंपरा से चली आ रही खंबनाट्य में और वर्तमान के खंबनाट्य में आशय एवं अभिव्यक्ति के धरातल पर बेहद फर्क महसूस किया गया। प्राप्त जानकारी के आधार पर खंबनाट्य की तीन अवस्थांतर बताया जा सकता है।

प्राचीन खंबनाट्य आविष्कार :-

कोरकू समाज में प्रचलित लोककथा तथा लोकगीतों के आधार पर हम यह निष्कर्ष तक पहुंच सकते है कि कोरकू का धर्म, श्रद्धा, प्रजा रक्षण के संकल्पना से खंबनाट्य का उदय हुआ है। इस शोध निबंध के आरंभ में दिये गये दो लोक कथाओं में महादेव, रावण, रावणपुत्र मेघनाथ इनके संदर्भ, कोरकुओं की सांस्कृतिक विरासत की पहचान कराता है। रावण पुत्र मेघनाथ ने उत्पात मचाने वाले शत्रु से रक्षण किया। इसलिए उनके प्रति श्रद्धा भावना से की जाने वाली मेघनाथ पूजा उसके स्मृति प्रित्यर्थ खड़ा किया गया। मेघनाथ स्तंभ सच्चे मायने में खंबनाट्य निर्माण का प्रेरणा स्त्रोत होंगा, ऐसा प्रतित होता है। रावण के प्रभुत्व के अधीन होने वाले दक्षिण पथ के निवासी कोरकू रक्षा की जिम्मेदारी रावण ने समय-समय पर किया है। यह कोरकुओं की लोकसंपदा से प्रस्फुटित होता है। महादेव, रावण, मेघनाथ यह अनार्यों के देवताओं के श्रद्धा भाव से इस नाटक की उत्पत्ति हुई होंगी।

मध्ययुगीन नाट्याविष्कार :-

कोरकुओं का निवास स्थान मेलघाट प्रदेश यह दक्षिण एवं उत्तर भारत के सांस्कृतिक परंपरा को जोड़ने वाला प्रदेश है। आर्यों का प्रथम प्रवास (अगस्त मुनि) राम-लक्ष्मण-सीता वनवास निमित्त किए गए प्रवास, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणीहरण, अलाउद्दीन खिलजी का विदर्भ प्रवास इस प्रदेश से हुआ है। इसका प्रमाण हमें मिलता है। इस सांस्कृतिक संक्रमण का प्रभाव कोरकुओं के जीवन पर भी हुआ। कोरकुओं के लोकगीतों से उनके मुठवा गोमेज, खेड़ा गोमेज देवताओं के साथ ही साथ कुछ आर्य देवताओं का संदर्भ भी मिलता है। खंबनाट्य पर भी इसका प्रभाव हुआ होगा, ऐसा जानकारों का मत है। गवळी समाज के संपर्क और मध्यप्रदेश के 'माच', ब्रजभाषा के 'रासनाट्य' शैली का प्रभाव मध्ययुगीन काल खंडों में खंबनाट्य पर दिखाई देता है। उसमें रामायण, महाभारत के कुछ घटना पर आधारित नाटक खंबनाट्य में भी प्रस्तुत किया जाने लगा था। खंबनाट्य के पूर्वरंग पूर्णतः यह संक्रमित नाट्यशैलियों से भरा पड़ा हुआ है। गोप-गोपिका, रासग्वाल, श्रीकृष्ण लीला वर्णन पर गीत गायन आदि, यह नाट्य प्रकार शहरी संपर्क में आने से प्रविष्ठ हुआ है।

आधुनिक नाट्याविष्कार :-

खंबनाट्य के पूर्व रंग में गणेश वंदना, रासग्वाल और उत्तररंग में गणेश मनौती, सोंगनाट्य, बोधगीत आदि विधित्मक होने के बावजूद भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में खंबनाट्य यातायात के साधन, प्रसार माध्यम के प्रचार-प्रसार और शिक्षा की सार्वत्रिकीकरण आदि कारण कोरकुओं के खंबनाट्य में वर्तमान के समस्याओं पर आधारित विषय पर भी प्रकाश डाला जाने लगा। मेलघाट में खंबनाट्य यह सार्वजनिक

मनोरंजन का हिस्सा बनकर आज समाज के सामने आया है। रात को 9, 10 बजे शुरू होने वाला यह श्रृंखलाबद्ध नाट्य नोकझोंक, उतार-चढ़ाव, खींचातानी आदि से सुबह 7:00 बजे तक शुरू रहता है। गांव के लोक नाट्यविधि के स्पर्धा में पूरी तरह से तल्लिन हो जाते है। मेलघाट के अनेक गांवों में यह नाट्य सामूहिक रुप से आयोजित किया जाता है।

निष्कर्ष -

इस स्पर्धा में जो विषय सामने आया। इसमें आदिवासियों के नाट्य कला के प्रस्तुतीकरण का स्वरूप भी बदलते जा रहा हैं, ऐसा यह स्पष्ट होता है। नवीन संक्रमित भावना व विषय आजकल खंबनाट्य में आने लगा है। रामायण, महाभारत आदि पुराण ग्रंथों के कथानकों के साथ ही साथ समाज की ज्वलंत वास्ताविकता, मानवी वृत्ति-प्रवृत्तियों के वर्णन, चित्रपट-दूरदर्शन, जनसंपर्क माध्यम इस कारण खंबनाट्य के प्रारूप बदलते जा रहे हैं। आजकल नवयुवक अपने संक्रमित अनुभवों को भी खंबनाट्य का विषय बना कर प्रस्तुत करने लगे हैं। खंबनाट्य के प्राचीन स्वरूप के बदलते दृश्य को देखकर बुजुर्ग कलाकार खेद व्यक्त करते दिखाई देते है। तथापि, नवीन कलाकार अपने अंगभूत कौशल और शिक्षा से आत्मसात ज्ञान का उपयोग कर इस विधित्मक खंबनाट्य में प्रबोधन परंपरा का अधिष्ठान स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। खंबनाट्य में अंधश्रद्धा निर्मूलन, शिक्षा का महत्व, परिवार के रिश्ते नातों के पवित्र बंधन, किसानों की समस्या, मजदूरों की समस्या एवं अपने परिवार की, समाज के वास्तविकता को सहज रूप से प्रस्तुत करने लगे है। यह भी बेहद महत्वपूर्ण है।

संदर्भसूची :-

1) डॉ. नारायण चौरे भारतीय जनजाति कोरकूओं के लोकगीत विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर - 440012 प्रथम संस्करण 1989
2) डॉ. नारायण चौरे कोरकू जनजाति का सांस्कृतिक इतिहास विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर - 440012 प्रथम संस्करण 1987
3) डॉ. अजीतसिंह दलरंजनसिंह पौहार, कोरकू लोकगीतों का साहित्यिक अध्ययन विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर - 440012 प्रथम
4) प्रभाकर मांडे, लोकरंगभूमी, मधुराज पब्लिकेशन प्रा. लि. पुणे 2000.
5) मधुकर वाकोड़े, लोकधाटीच्या वहीवाटी, स्वरुप प्रकाशन, औरंगाबाद, 2005.
6) संकलित लोकगीत
7) उनि, महाराष्ट्रातील आदिवासींचे लोकसाहित्य, श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, 2007
8) डॉ. वैजयंती पेशवे, कोरकू लोकगीत-संस्कृती आणि सौंदर्य, ए. पी. प्रकाशन 372, हनुमान नगर नागपूर - 440009, डॉ.
9) सौ. शैलजा देवगांवकर, महाराष्ट्रातील आदिवासींचे लोकसाहित्य, श्री साईनाथ प्रकाशन, 11 भगवाघर कॉम्पलेक्स धरमपेठ, नागपूर
10) डॉ. अशोक द. पाटील, कोरकू जनजीवन विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर - 440012 प्रथम संस्करण 1993